REVIEW OF RESEARCH

कुम्भ मेले का प्रबन्धन एवं सामान्य नगर जीवन पर प्रभावः हरिद्वार नगर के विशेष सन्दर्भ में

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

मीनाक्षी शर्मा[1] , प्रो.सी.एस.सूद[2]

[1]शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)
[2]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)

मथितार्थ

भारत के धार्मिक आयोजनों में अर्द्ध कुम्भ और कुम्भ का विशेष महत्व है। जो भारत के चार स्थानों प्रयाग, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में प्रत्येक छः और बारह वर्ष बाद आयोजित होता है। इन स्थानों पर प्रत्येक छः वर्ष में अर्द्ध कुम्भ और प्रत्येक बारह वर्ष में महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। कुम्भ का धार्मिक महत्व इतना अधिक है कि इस आयोजन के अवसर पर करोडों की संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटक आयोजन क्षेत्र में आवागमन करते हैं। हरिद्वार उन चार स्थानों में से एक है जहां कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है। कुम्भ पर्व का प्रबन्धन सरकार द्वारा गठित मेला प्रशासन के द्वारा किया जाता है। आयोजन अवधि में स्थानीय जनसमुदाय सहित श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। यद्यपि मेला प्रशासन द्वारा समस्याओं के समाधान हेतु पूर्ण पूर्व प्रयत्न किए जाते हैं तथापि कुम्भ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की संख्या का पूर्व अनुमान लगाना कठिन होता है। अतः कई बार प्रशासन सहित आम जनमानस के सम्मुख विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों उपस्थित हो जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में "कुम्भ मेले का प्रबन्धन और सामान्य नगर जीवन पर प्रभावः हरिद्वार नगर के विशेष सन्दर्भ में" शीर्षक पर शोध कार्य किया गया है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा नगर क्षेत्र के आम जनमानस और विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार किए गए। साक्षात्कार के उपरान्त प्राप्त आंकडों का विश्लेषण करके कुछ निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

संकेत शब्दः नगर प्रशासन, कुम्भ मेला, जन समुदाय, स्नान पर्व, श्रद्धालु, धार्मिक आस्था।

तान्योति यः पुमान योगे
सोऽमृतत्वाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथोरक्ङः
धनाधिपान।।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि जो मनुष्य कुम्भ पर्व के समागम में सम्मिलित होकर स्नान करते हैं, वे संसार बन्धन से मुक्त हो कर अमरत्व को प्राप्त होते हैं। उन लोगों के सामने देवतागण वैसे ही नमन करते हैं, जैसे धनवानों के सामने निर्धन लोग।[1] पौराणिक कथाओं में कुम्भ पर्व की उत्पत्ति को समुद्र मन्थन, जो देवताओं और असुरों ने मिलकर किया था, से जोडा जाता है। समुद्र मन्थन से प्राप्त दुर्लभ वस्तुओं में से एक अमृत कल"ा भी था। जिस पर अधिकार प्राप्त करने के लिए देवताओं एवं दानवों में भीषण संघर्ष हुआ। गुरू बृहस्पति के इ"ाारे पर इन्द्र पुत्र जयन्त उस अमृत कल"ा को लेकर भागे। अमृत कल"ा को सुरक्षा के दृष्टि से 12 अलग–अलग स्थानों पर रखा गया। भू–मण्डल में इनमें से चार स्थान हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक हैं। इन्हीं चार स्थानों पर अमृत कल"ा को रखने एवं उठाने से अमृत की बूंदे छलकी थी। अतः इन चारों स्थानों पर प्रत्येक बारहवें वर्ष कुम्भ महापर्व का आयोजन किया जाता है।[2] ऐसी

मान्यता है कि समुद्र मन्थन से प्रकट अमृत आज के समय में भी मनुष्य को जन्म एवं मृत्यु के बन्धन से मुक्त करने में सक्षम है। यही कारण है कि जिसके लिए कुम्भ आयोजन के समय करोडों नर–नारी कुम्भ स्नान हेतु आते रहे हैं।

कुम्भ पर्व वस्तुतः विचारों के मन्थन का पर्व है। जिसमें विभिन्न जाति, वर्ग, सम्प्रदायों के लोग एक साथ गंगा स्नान के साथ–साथ सन्तों के दर्शन कर ज्ञान लाभ प्राप्त करते हैं। कुम्भ जैसे बडे आयोजनों की सफलता मानवीय योजना का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करती है। परन्तु साथ ही योजना निर्माण में रही कमियां, विभागों के मध्य सामंजस्य की कमी, स्थायी अभिकरण की अनुपस्थिति इत्यादि कारक सामान्य नगर जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हरिद्वार नगर में कुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ आयोजन के प्रबन्धन के विवेचन के साथ ही सामान्य नगर जीवन पर पडने वाले प्रभाव को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है एवं स्थापित संसाधनों में बेहतर प्रबन्धन के उपाय सुझाए गए हैं।

कुम्भ की चार आयोजन स्थलियों में से एक हरिद्वार, उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय की शिवालिक श्रेणी की तलहटी में गंगा नदी के दाहिने तट पर स्थित है।[3] पावन धाम हरिद्वार 1,96,000 हेक्टेयर विस्तृत भू–भाग पर 29 अंश 28 मिनट उत्तरी अक्षांश तथा 78 अंश 10 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य सिन्धुतल से 294 मीटर की ऊँचाई पर विल्व तथा नील पर्वतों के मध्य लम्बाकार आकृति में बसा हुआ है। गंगा की निर्मल धारा, पूजा अर्चना के नयनाभिराम दृश्य, अनेकानेक मन्दिर, सिद्धपीठ, अखाडे, आश्रम दर्शन, अध्यात्म एवं वेदान्त के शिक्षण संस्थान, देश विदेश के श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों बरबस ही आकर्षित एवं मन्त्रमुग्ध कर लेते हैं।[4] सात मोक्षदायक तीर्थों– अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी– में से एक तीर्थ हरिद्वार है।[5] पौराणिक समय से धार्मिक क्रियाकलापों एवं धार्मिक आयोजनों की स्थली, वर्तमान समय में भी धार्मिक आयोजनों एवं उत्सवों का केन्द्र है। इन प्रमुख धार्मिक आयोजनों में से प्रत्येक बारहवें वर्ष महाकुम्भ एवं प्रत्येक छठे वर्ष अर्द्धकुम्भ का आयोजन होता है। पृथ्वी पर सोम छलकने के समय सूर्य, चन्द्र एवं गुरू जिन–जिन राशियों में थे, उन राशियों में पुनः आने पर कुम्भ आयोजित किए जाते हैं। कुम्भ राशि के गुरू में रहते जब सूर्य का मेष में संक्रमण होता है तब हरिद्वार में कुम्भ का योग बनता है।

कुम्भ न केवल भारत अपितु विश्व के सबसे बडे धार्मिक आयोजनों में से एक है। उत्तराखण्ड राज्य के गठन के पश्चात् हरिद्वार में वर्ष 2010 में प्रथम कुम्भ पर्व का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न पर्वों पर आने वाले श्रद्धालुओं को माह–वार अग्रलिखित सारणी में दर्शाया गया है–

2010 में कुम्भ मेले में विभिन्न स्नान पर्वों पर उपस्थित श्रद्धालुओं की संख्या

क्र0 सं0	*स्नान तिथि*	*स्नान पर्व*	*श्रद्धालुओं की संख्या (लाख में)*
1.	14 जनवरी, 2010	मकर संक्रांति	09
2.	15 जनवरी, 2010	मौनी अमावस्या / सूर्य ग्रहण	10
3.	20 जनवरी, 2010	बसन्त पंचमी	04
4.	30 जनवरी, 2010	माघ पूर्णिमा	15
5.	12 फरवरी, 2010	महाशिवरात्रि / शाही स्नान	45
6.	15 मार्च, 2010	सोमवती अमावस्या / शाही स्नान	70
7.	16 मार्च, 2010	नव सम्वत्शरारम्भ	35
8.	24 मार्च, 2010	श्रीराम नवमी	07
9.	30 मार्च, 2010	चैत्र पूर्णिमा / शाही स्नान	25
10.	14 अप्रैल, 2010	मेष संक्रांति / शाही स्नान	180
11.	28 अप्रैल, 2010	चैत्र अथिमात पूर्णिमा	16
कुल स्नानार्थियों की संख्या			416

स्त्रोतः कुम्भ मेला प्रशासन, 2010

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि कुम्भ मेला, 2010 के अन्तर्गत विभिन्न पर्वों पर लाखों की संख्या में तीर्थयात्री एवं पर्यटक हरिद्वार नगरी में आये। जिनमें सर्वाधिक 14 अप्रैल, 2010 में मेष संक्रांति में 180 लाख एवं सबसे कम बसन्त पंचमी में 4 लाख तीर्थयात्री हरिद्वार गंगा स्नान हेतु आए। कुम्भ के दौरान लाखों की संख्या में लोगों ने मेला क्षेत्र में कल्पवास भी किया। मेला प्रशासन के आंकडों के अनुसार सम्पूर्ण मेला अवधि में 8 करोड से अधिक लोग मेले में आए। वर्ष 2016 में आयोजित अर्द्धकुम्भ में लगभग 5 करोड श्रद्धालुओं का आगमन हुआ।[6]

इतने वृहद स्तर पर आयोजित कुम्भ पर्व का प्रबन्धन एवं संयोजन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जिसकी सम्पूर्ण व्यवस्था मेला प्रशासन के माध्यम से की जाती है। जिसका गठन महाकुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ मेले के आयोजन से पूर्व अस्थायी रूप से किया जाता है। आयोजन से पूर्व सम्पूर्ण मेला नगरी को बसाया जाता है। जिसका विभाजन विभिन्न सेक्टरों में किया जाता है। प्रत्येक सेक्टर का विकास पूर्णतः पृथक रूप से किया जाता है। जिसमें आवश्यक अवस्थापनाएं यथाः सडकें, चिकित्सा, पुलिस स्टेशन, जलापूर्ति, विद्युत, दुकानें, डाक, अग्निशमन, सफाई व्यवस्था तथा अन्य सार्वजनिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है।

कुम्भ मेले के आयोजन हेतु व्यवस्था तन्त्र– कुम्भ में स्थापित मेला नगरी का नियोजन एवं व्यवस्था उच्च प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा की जाती है। सर्वप्रथम प्रशासनिक स्तर पर मेले की सम्पूर्ण योजना बनायी जाती है एवं बजट निर्धारित करके तय समय सीमा में कार्यों को पूर्ण किया जाता है। कुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ आयोजन अपने स्तर का विश्व का सबसे बडा आयोजन होता है। इतने बडे आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था संचालन के लिए विभिन्न समिति एवं उपसमितियों का गठन किया जाता है। जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं[7]–

1. मुख्यमन्त्री की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति।
2. मुख्य सचिव की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय एम्पावर्ड समिति।
3. प्राप्त प्रस्तावों के वित्तीय परीक्षण एवं वित्तीय स्वीकृति आदि के सुचारू सम्पादन हेतु अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव वित्त विभाग की अध्यक्षता में उपसमिति।
4. कुम्भ क्षेत्र नियन्त्रण एवं व्यवस्था समिति की सहायता हेतु मेलाधिकारी की अध्यक्षता में समिति।
5. वरिष्ठ पुलिस अधिक्षक, हरिद्वार की अध्यक्षता में यातायात नियन्त्रण उपसमिति।

उपरोक्त समितियों के अतिरिक्त अन्तर्विभागीय समन्वय, विभिन्न विभागों एवं अभिकरणों द्वारा कराये जा रहे कार्यों की गुणवत्ता अनुश्रवण एवं समन्वय के लिए विभिन्न उपसमितियां भी गठित की जाती हैं। जिनका विवरण निम्नलिखित है–

क्र0 सं0	***उपसमिति का नाम***
1.	सेक्टर आयोजन समिति
2.	अवस्थापना अनुश्रवण समिति
3.	भूमि आवंटन समिति
4.	टिन–टेन्टेज निविदा समिति
5.	स्वच्छता निविदा समिति
6.	पार्किंग एवं यातायात समिति
7.	गुणवत्ता नियन्त्रण एवं भौतिक सत्यापन समिति
8.	सांस्कृतिक एवं प्रदर्शनी योजना समिति
9.	विज्ञापन नियन्त्रण समिति
10.	प्रचार–प्रसार एवं मीडिया योजना समिति
11.	आपूर्ति अनुश्रवण समिति

स्त्रोतः अर्द्धकुम्भ मेला प्रशासन, 2016

उपरोक्त समितियों एवं उपसमितियों की समय–समय पर आहूत बैठकों एवं गत कुम्भ तथा अर्द्धकुम्भ मेला आयोजन की पूर्व योजनाओं में जनसुविधा की दृष्टि तथा विभिन्न नागरिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों तथा साधु–सन्तों की मांगों का आंकलन कर अनेक नवीन कार्यों का समावेश तत्कालीन मेला योजना में किया जाता है।

सर्वप्रथम मेला प्रशासन द्वारा परियोजनाओं का प्रस्ताव तैयार कर मेले के प्रशासनिक विभाग, नगर शहरी विकास विभाग को प्रस्तुत किए जाते हैं। जिन पर एम्पावर्ड समिति के अनुमोदन के उपरान्त वित्त विभाग की सहमति से प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृतियां शासन स्तर से निर्गत होती है। इन शासकीय स्वीकृतियों के आधार पर मेला अधिष्ठान द्वारा विभागों/कार्यकारी संस्थाओं को उनकी मांग, कार्य की प्रगति तथा गुणवत्ता का आंकलन कर धनराशि हस्तान्तरित की जाती है।

अवस्थापना योजना निर्माण के पश्चात् इस धार्मिक अवसर पर करोडों अभ्यागतों की व्यवस्था तथा भीड का प्रबन्धन अपने आप में एक बडी चुनौती होती है, जो इस छोटे से शहर में दिवास्वप्न की भांति है। इस गुरूत्तर दायित्व की पूर्ति हेतु मेले के सम्पूर्ण क्षेत्र का विस्तृत सर्वे तथा सम्पूर्ण क्षेत्र का सूक्ष्मता से अध्ययन करके यातायात को इस प्रकार से नियोजित किया जाता है कि हरिद्वार शहर पर यातायात का दबाव कम से कम पडे। सेक्टरों का इस प्रकार से पुनर्गठन किया जाता है, जिससे सम्बन्धित सेक्टर अधिकारियों को सेक्टर की व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने में सुगमता रहे।

कुल तीर्थयात्रियों का लगभग 10 प्रतिशत रेलमार्ग से तथा शेष 90 प्रतिशत तीर्थयात्री सडक मार्ग से मेला क्षेत्र में आते हैं। लाखों की संख्या में सडक मार्ग से आने वाले यात्रियों की सुविधा की दृष्टि से अतिरिक्त बस स्टेशनों का निर्माण अस्थायी रूप से किया जाता है। मेले के समय अतिरिक्त विशेष रेल गाडियों का संचालन भी किया जाता है।

मेला अवधि में स्वास्थ्य रक्षा सुनिश्चित करने हेतु सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक होता है। इस हेतु मेला प्रारम्भ होने से लेकर मेला समाप्ति तक सम्पूर्ण मेला क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त सेक्टरों में सफाई, शौचालयों एवं मूत्रालयों की सफाई एवं कूडा निस्तारण का कार्य निरन्तर रूप से किया जाता है। कूडे के निस्तारण की स्थायी व्यवस्था न होने के कारण मेला क्षेत्र के कूडा निस्तारण हेतु हरिद्वार में 2 स्थानों एवं ऋषिकेश में एक स्थान पर ट्रेचिंग ग्राउण्ड बनाए जाते हैं। जिनमें उचित प्रकार से कूडे का निस्तारण करके चूना एवं मेलाथियान 5 डस्ट से विसंक्रमण लगातार कराया जाता है।

कुम्भ मेला अवधि में भारी संख्या में लोग देश–विदेश से आते हैं। सम्पूर्ण मेला अवधि लगभग चार माह की होती है। अतः इस सम्पूर्ण अवधि हेतु जनमानस को अपेक्षित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं दक्षता के साथ त्वरित गति से उपलब्ध कराने, मेले में स्वास्थ्य रक्षा हेतु हानिकारक परिजीवियों को नियन्त्रित करने तथा किसी भी आकस्मिक दुर्घटना का सामना करने के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक कार्य योजना तैयार की जाती है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं को सुनिश्चित करने हेतु सम्पूर्ण मेला क्षेत्र को सेक्टर्स एवं सेक्टर को विभिन्न जोन्स में विभाजित किया जाता है। स्वास्थ्य सुविधा हेतु चिकित्सालयों, प्राथमिक उपचार केन्द्रों, एम्बुलेन्सेज आदि की व्यवस्था की जाती है।

जीवन जीने योग्य कारकों में से एक स्वच्छ जल का महत्व सर्वविदित एवं सर्वज्ञात है। उत्तराखण्ड के सर्वाधिक जनसंख्या धारित करने वाला जिला हरिद्वार तथा राज्य के सबसे बडे आयोजन कुम्भ में आने वाले यात्रियों के लिए स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। इस चुनौतिपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का दायित्व पेयजल निगम का है। मेला आयोजन से पूर्व आंकलन करने का कार्य प्रारम्भ किया जाता है। मेला क्षेत्र में स्थायी एवं अस्थायी नलकूपों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति की जाती है।

कुम्भ मेला, 2010 के आयोजन अनुभव

वर्ष 2010 में आयोजित कुम्भ महापर्व को उत्तराखण्ड के प्रथम महाकुम्भ पर्व की संज्ञा अवश्य दी गयी किन्तु कुम्भ एक परम्परा एवं आयोजन है जिसका प्रवाह सदियों से अनवरत एवं अबाध है। कुम्भ 2010 के व्यवस्था एवं कार्य संचालन में विभिन्न संस्थाओं का योगदान रहा। सम्पूर्ण मेलावधि में आयोजन के प्रमुख अनुभव इस प्रकार हैं[8]–

- हरिद्वार कुम्भ मेला 2010 की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं योजना निर्माण हेतु 552 करोड रूपये की धनराशि अवमुक्त की गयी थी। इस धनराशि से 309 योजनाओं एवं उपयोजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया गया।
- करोडों की संख्या में तीर्थयात्रियों की सम्भावना को देखते हुए अतिरिक्त बसों एवं रेलों का संचालन किया गया। यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बसों एवे रेलगाडियों का संचालन किया गया। यात्रियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए हरिद्वार बस स्टेशन का जीर्णोद्धार किया गया। कुम्भ मेला क्षेत्र में 6 अस्थायी बस स्टेशनों का निर्माण किया गया। प्रत्येक बस स्टेशन से पृथक–पृथक गन्तव्य स्थान हेतु बसों का संचालन किया गया जिससे भीड प्रबन्धन किया जा सके और सडक यातायात में कोई अवरोध उत्पन्न न हो। रेलवे स्टेशन, हरिद्वार के जीर्णोद्धार का कार्य भी कुम्भ 2010 में किया गया। स्टेशन प्रांगण में व्यवसायिक निर्माण के कारण फ्री सरकुलेशन एरिया में कमी आ गयी, परिणामस्वरूप रेलवे स्टेशन पर अत्यधिक भीड एवं दबाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी।
- कुम्भ मेला–2010 में सुरक्षा व्यवस्था हेतु 202 जोनल मजिस्ट्रेट/सेक्टर मजिस्ट्रेट/अतिरिक्त मजिस्ट्रेट की तैनाती की गयी। 32 अस्थायी थाने, 42 अस्थायी पुलिस चौकियां एवं 10 अस्थायी पुलिस लाइन बनायी गयी। मेला सुरक्षा हेतु केन्द्रीय पुलिस सुरक्षा बल सहित 21500 पुलिस कर्मी तैनात किये गये।
- कुम्भ मेला–2010 में स्वास्थ्य रक्षा सुनिश्चित करने हेतु 6 अस्थायी बेस चिकित्सालय, 20 अस्थायी 10 बेड की क्षमता वाले चिकित्सालय एवं 19 अस्थायी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र बनाये गये। स्थायी चिकित्सालयों में 230 बेड की अतिरिक्त क्षमता अस्थायी रूप से बढायी गयी। स्वास्थ्य सेवाएं सुचारू रूप से उपलब्ध कराने हेतु 63 एम्बुलेन्स एवं छोटे वाहनों की व्यवस्था की गयी। 108 आपातकालीन एम्बुलेन्स द्वारा भी कुम्भ मेला–2010 में अपनी सेवाएं दी गयी। कुम्भ मेला–2010 में आने वाले साधु–सन्तों, सन्यासियों, श्रद्धालुओं एवं आम जनता के धार्मिक विचारों के कारण आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्वति को प्राथमिकता दी गयी।
- मेला अवधि में निर्बाध रूप से शुद्ध पेयजल आपूर्ति करने हेतु हरिद्वार की पेयजल क्षमता को बढाकर 63 एम0एल0डी0 से बढाकर 106 एम0एल0डी0 कर दिया गया। मेला क्षेत्र में 6 नए नलकूप, 6 नए अन्तः स्त्रोत कूप, 17 उच्च जलाशय, 46 किलोमीटर पाइप लाइन स्थायी रूप से बिछायी गयी। जन सुविधा को ध्यान में रखते हुए शुद्ध पेयजल आपूर्ति हेतु पेयजल के 1325 अस्थायी स्टैण्ड पोस्ट बनाये गये।
- मेले के दौरान गंगा प्रदूषण नियन्त्रण के उपाय भी किये गये। इस उद्देश्य से 36.85 किलोमीटर सीवर लाइन बिछायी गयी। नए सीवेज शोधन संयन्त्रों की स्थापना की गयी। 4 सीवर क्लीनिंग मशीन मेला क्षेत्र में लगायी गयी। अस्थायी शौचालयों के सोक पिट को खाली करने के लिए 8 सक्शन यन्त्र लगाये गये।

कुम्भ मेला– 2010 में मेला प्रशासन द्वारा नई पहल के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किये गये–

- ❖ दिव्यांग व्यक्तियों हेतु नवीन स्नान घाटों का निर्माण।
- ❖ दिव्यांग व्यक्तियों हेतु अनुकूल शौचालयों का निर्माण।
- ❖ हरित स्नान घाटों का निर्माण।
- ❖ अर्द्ध स्थायी प्रकृति के 3900 शौचालयों का निर्माण, जो कि कांवड मेले एवं अन्य स्नान पर्वों, मेलों एवं आयोजनों में उपयोग हो रहे हैं।[9]

कुम्भ मेला– 2010 व्यवस्था एवं सफलता की दृष्टि से अतुलनीय रहा किन्तु विभिन्न विभागों, कर्मचारियों एवं नीति निर्माण की कमियों के कारण उत्पन्न समस्याओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। कुम्भ मेला–2010 में उत्पन्न चुनौतियां एवं समस्याएं निम्नलिखित थी–

कुम्भ मेला– 2010 में किये गये निर्माण कार्य त्वरित गति से आयोजन से 6 माह पूर्व प्रारम्भ किये गये। इतने बडे स्तर के आयोजन के लिए निर्माण कार्यों हेतु समय की अपर्याप्तता रही। फलस्वरूप कई कार्य अपूर्ण रह गये जो कुम्भ मेला प्रारम्भ होने एवं श्रद्धालुओं के आगमन के दौरान भी निर्माण की अवस्था में थे। कार्यो का निर्माण की अवस्था में होने के कारण आम जनमानस एवं श्रद्धालुओं को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडा।

विभिन्न विभागों में सामंजस्य की कमी ने भी समस्याओं को बढाया। सडक निर्माण के उपरान्त गंगा प्रदूषण नियन्त्रण इकाई तथा जल निगम द्वारा मार्गों को पुनः खोदा गया। जिससे यातायात अवरोध एवं जाम की समस्या मेला क्षेत्र में बढ गयी।

कुम्भ मेला– 2010 के समय लाखों अभ्यागतों के आगमन को दृष्टिगत रखते हुए जिन वैकल्पिक मार्गों को विकसित किया गया था, समय पर उनका सुधारीकरण नहीं किया गया। प्राथमिकता के आधार पर इन कार्यों का मेला प्रारम्भ की तिथि से पूर्व पूर्ण होना आवश्यक था। वैकल्पिक मार्गों का समय पर संचालन न होने के कारण यात्रियों को 10–10 किलोमीटर दूरी पैदल तय करनी पडी।

मेला समिति एवं वन विभाग के मध्य समन्वय के प्रयास प्रशासन द्वारा नही किये गये। अतः कई कार्य वन भूमि से जुडे होने के कारण विलम्ब से सम्पन्न हो पाए। जिनमें हिल बाई पास का सुधारीकरण एवं मरमत्तीकरण भी शामिल था।

कुम्भ मेले के लिए होने वाले निर्माण कार्यों में विभागों के मध्य समन्वय का अभाव स्थानीय निवासियों की समस्याओं में वृद्धि करता है। कुम्भ मेला– 2010 में सीवर लाइन बिछाने के बाद सडक मरम्मत का कार्य प्रारम्भ किया गया। सडक मरम्मत कार्य पूर्ण होने के बाद पेयजल निगम द्वारा पेयजल लाइन बिछाने हेतु सडक को खोदा। उपरोक्त तथ्य विभागों के मध्य समन्वय के अभाव को दर्शाता है। जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय निवासियों को समस्याओं का सामना करना पडता है।

मुख्य पर्वों पर शहर में लाखों की संख्या में वाहनों के आवागमन से यातायात अवरोध एवं जाम की स्थिति उत्पन्न हुयी। जिससे शहर के आन्तरिक मार्ग भी प्रभावित हुए। जाम के कारण घण्टों यातायात अवरूद्ध रहा। जिससे कार्यस्थलों को जा रहे लोग समय पर अपने कार्यस्थल नहीं पहुंच पाए। कुम्भ मेले की परम्परानुसार विभिन्न धार्मिक जुलुसों के समय यातायात व्यवस्था लगभग पूर्ण रूप से अवरूद्ध हो गयी थी। सिर्फ विभिन्न अखाडों की पेशवायियों के लिए सडकों को आरक्षित रखा गया। फलस्वरूप स्थानीय निवासियों के दैनिक जीवन में व्यवधान उत्पन्न हुए।

मेला क्षेत्र में शौचालयो की कमी एवं यात्रियों में स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी के अभाव में खुले स्थानों पर शौच को रोक पाना सम्भव नहीं हो सका। जिससे मेला क्षेत्र के आसपास निवास करने वाले स्थानीय निवासियों को मेला अवधि एवं मेला सम्पन्न होने के बाद गन्दगी, दुर्गन्ध एवं विभिन्न प्रकार के संक्रमण का सामना करना पडा।

हरिद्वार नगर निगम में ठोस कचरा प्रबन्धन की व्यवस्था न होने के कारण कूडे को वास स्थलों के निकट स्थित डम्पिंग ग्राउण्ड में डम्प किया जाता है। यद्यपि इन डम्पिंग ग्राउण्ड में कीटनाशकों का छिडकाव किया जाता है तथापि आस–पास के क्षेत्र को दुर्गन्ध से पूर्णतः मुक्त कर पाना सम्भव नहीं हो पाता है। जिससे स्थानीय निवासियों को कठिनाइयां एवं असुविधाएं होती है।

मेले के समय स्थानीय निवासियों को पेयजल आपूर्ति में भी समस्याओं का सामना करना पडा। अर्द्ध कुम्भ मेला– 2016 में हरिद्वार नगर में विद्युत एवं जल आपूर्ति की समस्या देखी गयी। स्थायी एवं अस्थायी निर्माण में विभागों में सामंजस्य के अभाव ने समस्याओं में वृद्धि की।

पॉलीथीन प्रतिबन्धित क्षेत्र होने के उपरान्त भी सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में पॉलीथीन का अत्यधिक प्रयोग हुआ। मेला क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर पॉलीथीन के ढेर लगे हुए मिले। पॉलीथीन प्रयोग के कारण पर्यावरण दूषित हुआ एवं गंगा नदी प्रदूषित हुयी। गंगा नदी आम जन मानस की आस्था का प्रतीक होने के साथ–साथ जीवन यापन करने योग्य पारिस्थितिकी के निर्माण में भी सहायक है। अतः विभिन्न पर्वों पर गंगा नदी का प्रदूषित होना स्थानीय जनजीवन और पारिस्थितिकी को प्रभावित करता है।

कुम्भ मेला अवधि में मेला क्षेत्र में अतिक्रमण बढ जाता है। स्थानीय व्यापारियों के साथ अन्य राज्यों से आये व्यापारियों द्वारा आगमन मार्गों पर अपनी दुकानें लगायी जाती हैं। जिससे जन समुदाय के पैदल चलने योग्य मार्ग भी नहीं रह पाता है। स्थानीय निवासी, विशेषकर मेला क्षेत्र में रहने वाले लोगों को इससे परेशानियों का सामना करना पडा।

कुम्भ एवं अर्द्ध कुम्भ आयोजन हेतु बने शौचालय आयोजन के पश्चात् अनेक समस्यओं के कारक बन जाते हैं। कुम्भ मेला–2010 में स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिन शौचालयों का निर्माण किया गया, उन्हें यथास्थिति में छोड दिया गया। मेला समाप्ति के पश्चात् इन स्थानों पर अवैध कब्जा किया गया या फिर ये दुर्गन्ध प्रसारण के केन्द्र बन गये। जिस कारण लागों को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पडा। इन गन्दे स्थानों पर अनेक प्रकार की बीमारियों को उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

पर्वों के समय विशेषकर कुम्भ एवं अर्द्ध कुम्भ जैसे बडे आयोजनों में श्रद्धालुओं सहित विदेशी पर्यटक भी मेला क्षेत्र में आते हैं। जिससे नगर की जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। इस बढी हुयी जनसंख्या के कारण दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाती है। मांग के अनुपात में पूर्ति न होने पर वस्तुओं की कीमत में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। कभी कभी यह कीमत वृद्धि 100 प्रतिशत तक हो जाती है। इसके साथ–साथ मेला क्षेत्र में नकली एवं मिलावटी सामान की समस्या भी होती है। ये परिस्थितियां पर्यटकों सहित स्थानीय निवासियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है।

वर्तमान भूमण्डलीकरण के युग में कुम्भ के बढते प्रचार एवं प्रसार ने तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों की संख्या में वृद्धि की है। जिसका लाभ निश्चित रूप से राज्य की अर्थव्यवस्था एवं स्थानीय व्यापारियों को हुआ है। उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियां इस प्रकार की है कि विकास के मार्ग को मशीनीकरण के स्थान पर प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक निर्भर बनाती है। इस दिशा में पर्यटन का अत्यधिक महत्व है। पर्यटन की दृष्टि से कुम्भ का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। केवल भारत से ही नहीं अपितु विश्व के विभिन्न भागों से लोग इस आयोजन में भाग लेते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत वर्तमान समय में भी मनुष्यों में जन्म एवं मरण के बन्धन से मुक्ति प्राप्त करने की भावना को उत्पन्न करता है। जिस कारण सदियों से प्रत्येक कुम्भ आयोजन में लाखों की संख्या में लोग आते रहे हैं। कुम्भ आयोजन मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति का विशेष प्रतीक है। यह मानव की सृजनात्मकता और सामाजिकता का विशिष्ट उदाहरण है। यह एक विशाल जनसमुदाय की आस्था का प्रतीक है। यद्यपि कुम्भ के सफल आयोजन के प्रयास प्रशासन द्वारा किए जाते है तथापि पूर्व में उल्लखित समस्याएं भी इस आयोजन के दौरान उत्पन्न होती हैं। कुम्भ मेले का सफल आयोजन निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण दायित्व है। अस्थायी रूप से गठित मेला प्रशासन अल्प समय में इतने बढे दायित्व को निभाने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं हो पाता है। साथ ही इसके विघटन के पश्चात् अधिग्रहित जमीनों पर अवैध रूप से कब्जा किया जाता है। मेला अवधि में किये गये निर्माण कार्य भी उपेक्षित हो जाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हरिद्वार में स्थायी रूप से मेला प्राधिकरण का गठन किया जाय। जिसके माध्यम से प्रत्येक छठे वर्ष अर्द्ध कुम्भ एवं प्रत्येक बारहवें वर्ष कुम्भ मेला का आयोजन हेतु नियोजन एवं संचालन किया जाय। मेला प्राधिकरण को हरिद्वार तीर्थनगरी में वर्ष पर्यन्त चलने वाले पर्वों एवं स्नानों के संचालन और आयोजन का दायित्व भी दिया जाय। पौराणिक नगरी हरिद्वार का विकास वर्तमान समय में व्यवस्थित योजना के अनुसार किया जाना अति आवश्यक है। उत्तराखण्ड राज्य का सर्वाधिक जनसंख्या संकेन्द्रित नगर होने के साथ हरिद्वार एक प्रमुख औद्योगिक नगर भी है। अतः मेला क्षेत्र पर दबाव को कम करने के लिए हरिद्वार के आस–पास के स्थानों का विकास किया जाना आवश्यक है। फलस्वरूप नगर के मुख्य भाग पर भी दबाव कम हो सके।

सन्दर्भ संकेत

1. प्रशासनिक रिपोर्ट, कुम्भ मेला प्रशासन, 2010, पृ. 23
2. ध्यानी, नागेन्द्र, एवं कुकसाल, अरूण, 2010, उत्तराखण्ड में कुम्भ परम्परा एवं प्रतीक, विनसर पब्लिकेशन्स, देहरादून, पृ. 38
3. नैथानी, शिवप्रसाद, 2006, उत्तराखण्ड के तीर्थ एवं मन्दिर, पवेत्री प्रकाशन, श्रीनगर (गढ़वाल), पृ. 03
4. बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद, 2010, उत्तराखण्ड समग्र ज्ञान कोश, विनसर पब्लिकेशन्स, देहरादून, 2010, पृ. 121
5. नैथानी, शिवप्रसाद, पूर्ववत्, पृ. 03
6. अर्द्ध कुम्भ मेला प्रशासन, 2016
7. कुम्भ मेला प्रशासन, 2010
8. वही
9. वही